श्री ब्रजेश्वर शर्मा
(सेवानिव्रत, उप महानिदेशक दूरसंचार विभाग, भारत सरकार)
मोब:+91-9868218160 (दिल्ली) +91-9471216799 (बिहार)
ई-मेल : brajeshwar.sharma@gmail.com

मधुर सम्बंध

मधुर संबंध

हम सब सम्बन्धों की दुनिया मेँ रहते हैं। माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, नानी, नाना, पोता, मित्र इत्यादि। हम अनेका-अनेक संबंधों से जुड़े हैं। सम्बन्धों मेँ खटास एक बहुत बडी बाधा बनता है। जीवन के विकास के लिए सम्बन्धों मेँ मधुरता, एक गति देता है, प्रेरणा देता है। सम्बन्धों की बुनियाद परिवार मेँ पड़ती है। माता पिता के बीच यदि मधुर संबंध हैं तो बच्चे मधुर संबंध की छाया मेँ बढ़ते हैं। अक्सर होता कुछ और है फिर स्कूल, कॉलेज जहां शिक्षकों के बीच की कटुता, कर्मचारियों के बीच की कटुता , सभी की छाया बच्चों के कोमल मन पर पड़ती है। फिर कार्यस्थल, राष्ट्र के राजनीतिज्ञों के बीच, राष्ट्रों के बीच, धर्म की प्रतिबद्धताओं मेँ, आतंकवाद की हवा से, कटुता का बीज और पनपता है। इन सम्बन्धों के बीच डॉ॰ और मास्टर शा के शिक्षा का एक अहम स्थान है। मास्टर शा ने एक अमूल्य शिक्षा को जन्म दिया, जो परमात्मा से उनके द्वारा आया है, यह मानव के कल्याण के लिए रामबाण है। मास्टर शा का अमूल्य वचन है:-

"**पहले अपने सम्बन्धों की आत्मा को रूपांतर करेँ, फिर संबंध स्वतः मधुर होने लगेगा**"।

सम्बन्धों मेँ सुधार सभी चाहते हैं। एकांत मेँ, पूछते है। पति पत्नी से दुखी है, पत्नी पति से। माता-पिता बच्चों से दुखी हैं, मित्र मित्र से, संस्था मेँ एक दूसरे से, स्कूल कालेजों मेँ शिक्षक शिक्षक से, इत्यादि इत्यादि।

थोड़ी गहराई मेँ जाएँ तो पता चलेगा , सम्बन्धों की कटुता कर्म से जुड़ी है। यह नया नहीं हैं। संभव है, इसकी नीव पिछले जन्मों मे हो। इसको सही परिपेक्ष मेँ देखने के लिए, तीसरी आँख खुली होनी चाहिए ताकि हम आकाशीय लेखन को देख पाएँ। यहाँ हम बुद्ध के जीवन पर आधारित एक महत्वपूर्ण घटना का ज़िक्र कर्म को समझने के लिए कर रहें हैं।

यहाँ हम बुद्ध के जीवन की कहानी पर गौर करें – बुद्ध बैठे है, उनका परम शिष्य आनंद भी बैठा है। एक अज्ञात व्यक्ति आता है और बुद्ध पर थूकता है। बुद्ध पोछ लेते हैं। वह फिर थूकता है। बुद्ध फिर पोंछते है। वह गालियां निकालता है और फिर थूकता है। बुद्ध सहज भाव से पोछ डालते हैं। वह जाता है, थोड़ी देर पर लौटता है। वह गुस्से मे जल भून रहा है। उसके भीतर प्रश्न है, यह व्यक्ति कोई उत्तर क्यों नहीं देता। शांत क्यों है? क्या जड़ है ? गालियां देता है। क्या तुम समझते नहीं ? तुम नपुंसक हो, कायर हो, निकम्मे हो, किसी लायक नहीं हो। फिर थूकता है, बुद्ध और प्रेम का भाव दिखाते हैं और पोछ लेते हैं।

फिर व्यक्ति चला जाता है । आनंद भी आग बबूला होता है। वह कहता है, आप आज्ञा दें, मैं उस व्यक्ति को समझा दूँ, उसे ठीक कर दूँ। बुद्ध बोलते हैं – बिलकुल शांत और सरल ढंग से – आनंद , वह गालियाँ मुझे दे रहा है, तुम क्यों आग बबूला हो रहे हो? मैं शांत हूँ और तुम क्रोध से भरे हो। तुम्हारा उससे क्या लेना देना है ।

आनंद - उसने बहुत ज़्यादती की है। एक बार, दो बार, तीन बार नहीं, चौथी बार दूर से लौटकर थूका है। उसे सीख देनी पड़ेगी। मैं आपके कारण चुप था। आप आज्ञा दें। मैं उसे सबक सिखाना चाहता हूँ।

बुद्ध - वह बहुत भला आदमी है। मैंने पिछले जन्मों में उसे बहुत कष्ट दिया है। मेरे अत्याचार पर मुझे फांसी हो सकती थी। वह व्यक्ति भला है, अति भला है क्योंकि वह सिर्फ थूक रहा है। आनंद शांत हो जाओ। मैं अपना आकाशीय रेकॉर्ड देख रहा हूँ। मैं कहानी इसी जन्म में पूरी करना चाहता हूँ। मैं निश्चिंत हूँ कि कहानी ख़त्म हुई। आनंद, तुम शांत हो जाओ।   तुम यदि प्रतिक्रिया करोगे तो क्रिया में उलझ जाओगे। तुम्हें कर्ज़ चुकाना पड़ेगा। मैं धन्यभागी हूँ, उस व्यक्ति ने मुझे कर्ज़ चुकाने का मौका दिया। मैं उसका बहुत बहुत आभारी हूँ। मैं उसे आशीष दे रहा था और देता हूँ। वह अति प्यारा व्यक्ति है।

दूसरे दिन वह व्यक्ति सुबह सुबह आया। आनंद फिर बगल में बैठा है। वह बुद्ध के चरणों में झुकता है, माफी मांगता है। कहता है, मैं रात्रि भर सो न सका। मेरा ध्यान आप पर लगा रहा। मैं थूकता रहा और आप शांत रहे। मुझे माफ करें।

बुद्ध- मेरे भीतर 'मैं' का भाव नहीं हैं। तुमने जो किया है, मैंने उस समय भी नहीं लिया। अभी भी मैं नहीं ले रहा हूँ। कल मैं एक गाँव से गुज़र रहा था, लोगों ने मिठाइयाँ दीं। मैंने थोड़ा खाया और थोड़ा वहाँ के लोगों में बाँट दिया। दूसरे गाँव ने जूते का हार दिया। समझे, जिसके पास जो होगा वही तो वो देगा। मेरे लिए दोनों के लिए समान भाव है। दोनों के प्रति समान प्रेम है। मित्र, मेरे भीतर प्रेम है, करुणा है, अपार करुणा है, फिर यही तो बहेगा। मेरे प्रेम में, मेरी करुणा में कुछ बाधा नहीं है। यह असीम है और मैं असीम से जुड़ा हूँ तभी तो करुणा ही निकलेगा। मित्र तुमने कुछ नहीं किया। मैं तुम्हारे प्रति प्रेम और करुणा से भरा हूँ। मेरे पास यही धन है। तुम मुझसे यही पाओगे। मेरे भीतर से यही बहेगा। तुम धन्यभागी हो क्योंकि तुमने मेरी करुणा को बहने को मौका दिया। मैं तुम्हारे प्रति करुणा से भरा हूँ। करुणा मेरा स्वभाव है।

हमारे सारे सम्बन्धों कि कड़वाहट हमारे कर्मों से प्रभावित होती है। कर्म इस जन्म के हो सकते हैं, पिछले जन्मों के हो सकते हैं। अगर तीसरी आँख खुली हो तो इसे जाना जा सकता है। मैं तीसरी आँख खुली लोगों को जानता हूँ। उनको पास बैठ कर काफ़ी सुना है। मैं यहाँ एक-दो कहानियाँ कहता हूँ:-

मेरे एक मित्र हैं। उनको अपनी पत्नी से काफ़ी कड़वाहट है। मैं उनको समझाता था परंतु वे मानते नहीं थे। मेरे सलाह देने पर उन्होने यह प्रश्न उनसे किया, जिनकी आँखें खुली (तीसरी आँखें) हैं, पता चला 20 जन्मों से पति पत्नी हैं फिर 6 जन्मों से आपस मे झगड़ रहे है। इसको रोकना उन्ही पर हैं। अब आप इसको सुलझा ले वरना यह कहानी और अनेक जन्मों मेँ भी चलती रहेगी। इस शृंखला को ख़त्म करना उनका काम है।

दूसरी कहानी -एक पत्नी ने मास्टर (जिनकी तीसरी आँख खुली है) से कहा। मुझे अपने पति से शिकायत है। वे 5-6 औरतों से संबन्धित है। मानते नहीं। रोज़ झूठ बोलते है। मैं परेशान हूँ। मेरे संबंध तनाव से भरे हैं। मुझे सलाह दें, मार्ग बताएं।

मास्टर ने उनके आकाशीय रेकॉर्ड को खोला और बोला – पिछले जन्म मेँ आप पति थे। आपका 12 औरतों से संबंध था। कृपया अब कहानी को रोकें। अपने पति को माफ करें। परमात्मा से क्षमायाचना करें। परमात्मा परम करुणावान है। उससे क्षमायाचना करें।

मुझे लोग मिलते हैं जो माफ नहीं कर सकते हैं। अपनी पत्नी, अपने बच्चे को माफ नहीं कर सकते। वे दुख मे जी रहे हैं परंतु अड़े है। नहीं माफ करेंगें। वह हज़ार तर्क देते हैं लेकिन माफ नहीं करेंगें।

अभी हमने बीमारी को समझा। अब इससे छुटकारा एवं रोकथाम कि विधि समझेंगे।

<u>पति पत्नी का संबंध</u>

परिवार मेँ सम्बन्धों की बुनियाद पड़ती है। बच्चों मे यहाँ से संस्कार पड़ता है। बच्चों का कोमल हृदय सतत पति पत्नी के झगड़ो से तुरंत प्रभावित होता है।

<u>विधि:-</u> ध्यान की मुद्रा मेँ बैठें। शांत, रीढ़ सीधी हो। अब महामंत्र का जाप करे – “सान सान जो लिउ वह याओ ऊ”। कम से कम तीन दफा, फिर पति का आह्वाहन करें (पति पत्नी का आह्वाहन करेंगे, विधि यही होगी)।

“प्रिय आत्मा मेरे पति की (पति का नाम लें या भाव रखें), मैं आपसे प्रेम करती हूँ, आप कृपया मेरे पास आयें। हमारे सम्बन्धों में काफ़ी बाधायें हैं, हम दोनों उसे दूर करें, धन्यवाद।“

फिर मंत्र का जाप करें और महसूस करें कि आपके पति आपके सामने है। फिर कहें –

मैं आपको माफ करती हूँ, आप मुझे माफ करें,

मैं आपको प्यार करती हूँ, आप मुझे प्यार करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाएँ, प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

नीचे के 1 और 2 का जाप 3-5 मिनट मिनट करें। याद रहे इसको दुहराते रहना है, इसे मंत्र समझे,

1。

मैं आपको माफ करती हूँ,

आप मुझे माफ करते हैं,

हम एक दूसरे को माफ करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

मैं आपको माफ करती हूँ,

2.

आप मुझे प्रेम करते हैं,

हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

ऊपर दिये गए 1) और 2) को कम से कम 3-5 मिनट तक एक दफा मे गाना है या जाप करना है। दिन में 2-4 दफा आवश्यकतानुसार दुहराना है। इसके बाद 1 से 3 मिनट परमात्मा का गीत गाना है। पहले आत्मा कि भाषा में गाना हैं और फिर हिन्दी मे-

	लु ला लु ला ली	
दिव्य	लु ला लु ला ला ली	आत्मा कि भाषा
गीत	लु ला लु ला ली लु ला	
	लु ला ली लु ला	
	लु ला ली लु ला	
	मुझे प्रेम मेरे दिल और आत्मा से,	
	मुझे प्रेम सारे मानवता से,	
	जोड़ो दिल और आत्मा साथ	
	प्रेम शांति और एकता	
	प्रेम शांति और एकता	

परमात्मा का गीत प्रेम और श्रद्धा से गाये या जाप करे। महसूस करें पति महोदय भी साथ गा रहे हैं। दिन में, रात में, जब मौका मिले इसे दोहराएँ। अद्भुत परिणाम मिलेगा।

नोटः ऊपर की विधि को हम किसी भी व्यक्ति से संबंध सुधारने के लिए प्रयोग कर सकते है। मान लें, मित्र से कहासुनी हो गई। तो इसे करें। मान लें मित्र का नाम रमेश है। फिर प्रक्रिया ऊपरवाली होगी। ध्यान में बैठे। पहले महामंत्र का पाठ करें—

प्रिय आत्मा मेरे मित्र रमेश की,

मैं आपसे प्रेम करता हूँ,

कृपया आप आयें, हमारे बीच कटुता है,

हम दोनों उसे दूर करें ,

धन्यवाद ।

फिर आप दिव्य गीत प्रेम, शांति और एकता का पाठ प्रेम से शुरू करें। मित्र को भी गीत में शामिल करें। इससे कटुता मिटेगी। आज़मा कर देखें। यह अचूक दवा है। कभी असफल नहीं होगा। भरोसा चाहिए।

पूरे परिवार के साथ भी हम परामर्श कर सकते है । संभव है, कटुता नहीं है फिर भी प्रेम, शांति और एकता के लिए किया जा सकता है। विधिः-

शांत, ध्यान की मुद्रा में बैठेंः-

"सान सान जो लिठ वह याओ ऊ" महामंत्र का जाप करें, फिर

प्रिय आत्मा, मेरे परिवार के सभी लोगों का (आप सब का नाम एक, एक कर लें)

मैं आप सब से प्रेम करता हूँ,

हमारे परिवार की बुनियाद प्रेम पर है,

हम सब एक दूसरे को प्रेम करते हैं,

आयें मिलकर परामर्श करें।

धन्यवाद ।

क्षमायाचना एक अमोघ अस्त्र हैं। अतः अब इसका उपयोग करेंगे।

हम एक दूसरे को माफ करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाते हैं,

हम एक दूसरे को माफ करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाते हैं।

<u>दिव्य गीत याद कर लेना चाहिए</u>

इसे गाना है, फिर सब से कहें, हम सब मिलकर दिव्य गीत, प्रेम, शांति और एकता का गीत गायें। फिर गीत का गायन करें।

अंत में करें—

हाओ, हाओ, हाओ,

बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा,

गौन सौंग, गौन सौंग, गौन सौंग

सभी आदर पूर्वक गायें।

नोट: जब भी आत्म परामर्श के लिए किसी आत्मा का आह्वाहन करेंगे तो अंत में, "हाओ, हाओ, हाओ और गौन सौंग, गौन सौंग, गौन सौंग" 3 दफा करेंगे।

जब किसी से बहुत कटुता हो, लड़ाई हो, आप संबंध बेहतर बनाना चाहते है। घर में भी अगर पति पत्नी में बहुत कटुता हो, तो हमें क्षमायाचना जोड़ना पड़ेगा। आइये क्षमायाचना को जोड़ कर करें:

फिर हम पत्नी-पति के संबंध को उदाहरण के लिए लेंगे। ऐसा किसी के साथ भी किया जा सकता है।

शांत ध्यान की मुद्रा में बैठे। महामंत्र से शुरू करें-

"सान सान जो लिठ वाह याओ ऊ" का जाप करें।

फिर आत्मा को परामर्श के लिए आह्वाहन करें ।

प्रिय आत्मा मेरी पत्नी (नाम लें) की,

मैं आपसे प्रेम करता हूँ,

कृपया आयें, हमारे सम्बन्धों की कटुता को आपस के परामर्श से दूर करें।

धन्यवाद ।

फिर कहें :-

मैं तुम्हें माफ करता हूँ,

तुम मुझे माफ करो,

हम एक दूसरे को माफ करें,

प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ,

तुम मुझे प्रेम करती हो,

हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं,

प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

उपरोक्त प्रक्रिया को 3-5 मिनट करेंगें। श्रद्धा से करेंगे। पत्नी को माफ करेंगे, माफी लेंगे। 3-5 मिनट के बाद, परमात्मा के दिव्य गीत का गायन करें या जाप करे।

अंत में कहेंगे-:

हाओ, हाओ, हाओ (बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा)

गौन सौंग, गौन सौंग, गौन सौंग ।

(आत्माओं को आदर पूर्वक भेजने के लिए कहा जाता है)

नोट: यहाँ हम आग्रह करते हैं, पूरी प्रक्रिया को किसी योग्य व्यक्ति से सीख लें या बुलाकर समझ लें। अगर संस्था या व्यक्ति विशेष जरूरत समझें तो मुझे संपर्क करें, मैं अपना संपर्क सूत्र दे रहा हूँ- **ब्रजेश्वर शर्मा, 0621–2277473, 011-25087473, मोबाइल- 09471216799 (बिहार), 09868218160 (दिल्ली), ।**

कार्यस्थल पर बॉस या सहयोगी से संबंध सुधार के लिए ऊपर जो प्रक्रिया दी गई है वैसा ही करेंगे। अगर बॉस का नाम राम है तो कहेंगे, पहले महामंत्र जपेंगे, फिर कहेंगे-

प्रिय आत्मा राम की, मैं आपसे प्रेम करता हूँ,
आप मेरे बॉस हैं, मैं आपका आदर करता हूँ,
कृपया आप आयें, धन्यवाद ।
फिर कहे-

मुझे क्षमा करें, मैं आपको क्षमा करता हूँ,
हम एक दूसरे को क्षमा करतें हैं,
प्रेम, शांति और एकता लाएँ।
प्रेम, शांति और एकता लाएँ।

इसको मंत्र समझकर दोहराते रहना है।

इसको 3-5 मिनट दोहराना है। फिर परमात्मा के गीत को गायें । करके देखें चमत्कार होगा।

नोट: मुकद्दमों मे फँसें हों, तो मुकद्दमों से संबन्धित सभी को आह्वाहन करें। यहाँ हम संस्था मेँ संबंध सुधार की विधि को दे रहे हैं। इसी तरह मुकद्दमे से संबन्धित सभी का आव्हान करके करेंगे।

<u>संस्था में प्रेम, शांति और एकता लाना</u>

हर संस्था की प्रगति के लिए आपसी सहयोग, विश्वास ज़रूरी हैं। इसके लिए आत्म परामर्श एक आदर्श विधि हैं।

<u>विधि</u>

शांत बैठे । महामंत्र का जाप करें। परमात्मा के गीत का जाप करें। फिर सभी कर्मचारियों , व्यक्तियों का भाव करें एवं आव्हान करें।

समाप्त करने की विधि समान है, जैसे हमने पहले बताया है।

प्रिय सभी आत्माओं , जो इस संस्था से जुड़े हैं (नाम ले, या नंबर कहें, या सिर्फ सभी आत्माओं को भाव से शामिल करें)

मैं आप सबसे प्रेम करता हूँ, आप सब का आदर करता हूँ, आप सब आयें,

मेरे साथ शामिल हों, संस्था हमारी हैं, हम सब इससे जुड़े हैं, आयें, हम सब एक दूसरे को क्षमा करें, एक दूसरे को प्रेम करें, हम सब अपने संबंधो का रूपान्तरण करें,

सब को धन्यवाद ।

फिर महामंत्र “सान सान” का गायन करें। 3-5 मिनट तक गाना हैं।

फिर सब से कहें, आइये हम सब मिलकर प्रेम, शांति और एकता का गीत गायें। गाने से हमारी संस्था के सभी अवरोध दूर हटेंगे, हमारे अवरोध हटेंगे । फिर आप गीत को गायें। दिव्य गीत 3-5 मिनट गाना हैं।

नोट:

1. अगर किसी व्यक्ति विशेष के बीच कटुता हो, आपस में टकराव हो, तो भी यह विधि कार्य करेगी। वैसे क्षमायाचना का गीत भी जोड़ सकते हैं तो चमत्कार होगा।

2. "सान सान जो लिउ वाह याओ ऊ" का गीत चमत्कार लाता हैं। इसका प्रयोग कारगर है।

3. प्रेम, शांति और एकता का गीत अगर संस्था में चलाया जाए तो दिव्य शांति को संस्था में भरेगा। संस्था में यदि इस गीत को 24 X 7 बजाया जाये तो इसके परिणाम को अनुभव किया जा सकता है। इसे चलाकर अनुमान करें।

4. अपने घर में भी 24 X 7 इस गीत को बजने दें। यह प्रेम, शांति एवं एकता लाता है।

5. इस गीत में शक्ति हैं, बीमारियों से छुटकारा देने का मंत्र है। जिस घर में बीमारियाँ हों, वहाँ इसे 24 X 7 बजने दें, चमत्कार होगा। अनुभव करें एवं अनुभव बांटे।

About Dr. & Master Zhi Gang Sha:

Dr. & Gang Sha is a soul leader, a world-renowned master healer, and a divine servant. He is the creator of 'Soul Mind Body Medicine'. He was trained as a conventional medical doctor in China and a doctor of traditional Chinese medicine in Canada & China. Dr. & Master Gang Sha is a soul leader, a world-renowned master healer, and a divine servant. He is the creator of 'Soul Mind Body Medicine'. He was trained as a conventional medical doctor in China and a doctor of traditional Chinese medicine in Canada & China.

He is the founder of the Institute of Soul Healing and Enlightenment and the Love Peace Harmony Movement. Master Sha is a grandmaster of many ancient disciplines including qigong, tai chi, kung fu, feng shui, and the I ching. Master Sha is also an expert in the most advanced cellular healing science now occurring in China.

In the West, he is involved in breakthrough research on the effects of spirit on the human system. Master Sha was named Qgong Master of the Year at the Fifth World Congress on Qigong. In 2006, he was honored with the prestigious Martin Luther King, Jr. Commemorative Commission Award for his humanitarian efforts. His television program, The Power of Soul, debuted on public television in July 2010.

About Sri Brajeshwar Sharma:

Sri. B Sharma, an Engg. Graduate was born on 1st January, 1943 in remote village of Sitamarhi Dist. in Bihar. After serving Dept. of Telecom, GoI for over 33 years, he retired in Dec-2002. He belonged to Indian Telecommunication Service and served on various key posts like Dy Director General (Personnel) & DDG (IR & Trg.)

He gained expertise in Training Development & instructional Technology. About two hundred training modules were developed under his guidance. He fell in love of yoga and philosophy at the tender age of 10 itself. He received several prizes during school days and was awarded Director's medal (1st prize) for Yoga at Lal Bahadur Shashtri National Academy of Administration, Musoorie. He has trained about ten thousand men & women in India & abroad in yoga & allied sciences. He is Osho lover since 1972 and was initiated in Sanyas in early 1983 and given new name, Swami Prem Niranjan. He is still an ardent disciple, lover and admirer of his philosophical insight on all aspects of life. He has acquired good knowledge in the field of Alternative therapy. To name a few, he is Grand Master of Reiki & Teacher in Pranic Healing. He has got good working knowledge of Acu-yoga, Tao yoga, Naturopathy, Acupressure, Su-Jok, Reflexology, Shiatsu and Feng Shui.

With Divine guidance, he came in touch with Soul Healing India. He was chosen for Divine Healing Hands training. He participated in Divine Healing workshop in April-2013 and a new Soul Healing journey started. Now he is undergoing Divine Teacher and Healer Training. He is using Divine Healing Hands for all aspects of life. He is totally and fully focused to the techniques of Master Sha. His all workshops focus on Soul healing techniques as this is easy, versatile and helps in all aspects of life including physical, emotional, relationship, business and finance.

With the background of Yoga, Pranik healing, Reiki, magnified healing, Acupressure, Naturopath etc., he is powerful holistic healer and quality trainer.

For more details about his work, kindly visit the website **www.excelyoga.org** .